बाल किलकारी

(बिहार बाल भवन का मासिक अखबार)

प्यारे चाचा नेहरू को समर्पित यह अंक

अंक-11, वर्ष - 2 | नवम्बर-2016 | मूल्य 10/-

मेरे चाचा नेहरू

प्यारे दोस्तो,

नवम्बर का महीना हम सभी को ढेरों खुशियाँ देने वाली होती है। पता है- कैसे.....? पूछो.....? पूछो.....? वह ऐसे कि 14 नवम्बर को हमारे चाचू, यानि स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म-दिन जो होता है। हम सभी उत्साहित धूम-धाम से उनके जन्म दिन को मनाते हैं। ढेरों मस्तियाँ भी करते हैं। चाचू हम बच्चों से बहुत प्यार करते थे, और हम बच्चे भी। और तो और इस महीने में पर्वों से उत्साहित होते ही नये नोटों के दर्शन होने लगे हैं। तो चलो, चाचू से जुड़ी एक कहानी हो जाए..... चाचू ने अपनी कहानी में लिखा है कि तमाम उत्सवों मे इन्हें एक सलाना जलसे से में ज्यादा दिलचस्पी रहती, जिसका ख़ास उनसे ही ताल्लुक था- यानी उनकी वर्षगाँठ का उत्सव। इस दिन वे बड़े उत्साह और रंग में रहते थे। सुबह ही एक बड़े तराजू में उन्हें गेहूँ और दूसरी चीजों से तौला जाता और फिर वे चीजें गरीबों को बाँट दी जाती । इसके बाद नये-नये कपड़ो से सज-धजकर उन्हें भेंट और तोहफे दिये जाते फिर शाम को दावत दी जाती। इस दिन तो मानो वे राजा ही हो जाते; मगर उन्हें इस बात का बड़ा दु:ख होता था कि वर्षगाँठ साल में एक बार ही क्यों आती है? इस बात को लेकर उन्होंने एक बार आन्दोलन करने की कोशिश भी कि फिर उन्होंने अपनी कथा में लिखा ''उस वक्त तो क्या मुझे पता था कि एक समय ऐसा भी आयेगा जब यह वर्षगाँठ हमको अपने बुढ़ापे के आने की दु:खदायी याद दिलाया करेगी। तो दोस्तो। आप भी बूढ़ा होना नहीं न चाहेंगे.....? हर उत्सव को मस्ती के साथ जीना सिखिए और आगे बढ़िये।

किलकारी लाल

मुनदुन राज

जवाहर लाल नेहरू एक महान पिता के महान पुत्र थे। उनका जन्म 14 नवम्बर 1889 को इलाहाबाद में हुआ था। उनके पिता श्री मोतीलाल नेहरू एक सफल वकील थे। जवाहर लाल नेहरू धनी माता-पिता के इकलौते पुत्र थे। उनका पालन-पोषण बड़े लाड़-प्यार से हुआ था। वे बचपन से ही सत्यवादी और ईमानदार थे। उनकी पत्नी का नाम श्रीमती कमला नेहरू और उनकी बेटी का नाम इंदिरा गाँधी था। वे इंगलैण्ड में सात वर्षों तक रहे और वकालत की पढ़ाई में उत्तीर्ण होने के बाद 1912 में भारत लौट आए। वे इलाहाबाद हाई कोर्ट में वकालत करने लगे। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनकी बहुत ही रूचि थी। अपना अरामदायक जीवन त्याग कर काँग्रेस में शामिल हो गए। इस प्रकार देश की सेवा के लिए उन्होंने कठिन जीवन को चुना। वे जल्दी ही महान नेता बन गए। कई बार जेल भी गए। लेकिन अपना साहस नहीं छोड़ा। जब भारत आजाद हुआ तो वे स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने और अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक अपने पद पर रहे। उन्हें बच्चों से बहुत ही प्यार था। बच्चें उन्हें प्यार से चाचा नेहरू कहकर बुलाते थे। वे अपनी शेरवानी के पॉकेट में हमेशा एक लाल गुलाब रखते थे। जिसके कारण आज भी लोग शेरवानी कॉलर को नेहरू कॉलर के नाम से जानते हैं। उन्होंने रूस से आने के बाद बच्चों के लिए बाल भवन की स्थापना की। जब वे स्वतंत्रता-संग्राम में जेल गए थे, तो अपनी जीवनी पत्र के रूप में अपनी पुत्री इंदिरा गाँधी को लिखा करते थे, वही जीवनी एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुई, जिसक नाम था- पिता का पत्र पुत्री के नाम।

जूली कुमारी

बाल किलकारी, नवम्बर 2009 से उद्धृत

बाल दिवस

बाल दिवस का उत्सव होगा
सारे हिन्दुस्तान में,
महाराष्ट्र, गुजरात, हिमाचल,
केरल, राजस्थान में।
आज खेलने-खाने का दिन
हर बच्चा आज़ाद है,
चिन्ता क्या है अगर किसी को
पाठ न पूरा याद है।
चलो आज हम-तुम भी
दिनभर, खेलेंगे मैदान में,
बाल दिवस का उत्सव होगा
सारे हिन्दुस्तान में।
रोज हमें विद्यालय में जो
टीचर जी थे डाँटते,
आज उन्हीं को हमने देखा
बालूशाही बाँटते।
भेद नहीं कुछ भोले-भाले
या नटखट शैतान में,
बाल दिवस का उत्सव होगा
सारे हिन्दुस्तान में।
सुनते हैं सारी दुनिया के
छोटे बच्चे एक हैं,
बड़े-बड़े से कहीं अधिक
वे सीधे-सच्चे नेक हैं।
रूस, ब्रिटेन, यूरोप, अमेरिका,
अफ्रिका, जापान में,
बाल दिवस का उत्सव होगा,
सारे हिन्दुस्तान में।

साभार -'धर्मयुग' नवम्बर 1973

प्यारे बच्चो

बच्चों के लिए काम करने वाली संस्था 'किलकारी' बिहार बाल- भवन पिछले आठ वर्षों से बच्चों द्वारा तैयार बाल अखबार ''बाल किलकारी'' प्रकाशित करती आ रही है। बच्चे ही इस अखबार में स्तम्भों का लेखन एवं सम्पादन का कार्य करते हैं।

जनवरी माह से यह अखबार अब अड़तालीस पृष्ठों की एक पत्रिका के रूप में प्रकाशित होने वाली है। इस पत्रिका में अपने प्रदेश एवं देश के बड़े लेखक, कवि एवं पत्रकारों की रचनाएँ भी प्रकाशित की जाएगी। इस पत्रिका में आप भी अपनी स्वयं की लिखी हुई रचना निम्न स्तम्भों में से किसी भी स्तम्भ में लिख सकते हैं।

प्रधानमंत्री को पत्र लिखें, कहानी, आपके जीवन की यादगार घटना, अपनी बनाई कोई अच्छी पेंटिंग, आपके या आपके दोस्तों की बहादुरी के किस्से, कार्टुन बनाओ। आपके मन की बात

आप सादे कागज पर अपनी लिखी हुई रचना कृपया इस पते पर हमें भेजें।

पता- किलकारी, बिहार बाल भवन, सैदपुर, राजेन्द्र नगर, पटना -800004 (बिहार)

मो० 9835224919, 7463878822, 0612&2661295, www.kilkaribihar.org info@kilkaribihar.org

नये वर्ष की शुभकामनाओं के साथ!

ज्योति परिहार, निदेशक

घूमा डाला

पटना से दिल्ली 100 मील, हर मील पर एक-एक किल्ली, हर किल्ली से बंधी एक-एक बिल्ली। अब बताओ, बिल्ली और किल्ली मिलकर कितने हुए?

एहसास

अंतरा एक छोटी लड़की थी। यूँ तो वह पढ़ाई में तेज थी, पर काफी नटखट भी थी। वह शनिवार का दिन था। स्कूल से लौटते वक्त उसने एक अंधे आदमी को टक्कर मार दी। इस पर ध्यान न देते हुए वह कल की छुट्टियों के बारे में सोचती

आगे बढ़ रही थी कि पीछे से आवाज आई ''देखकर नहीं चल सकते क्या?'' अंतरा ने मुड़कर अंधे को देखा तो बिफर कर गुस्से से बोली, ''अंधे तो तुम हो, हमें क्यों नहीं दिखेगा!'' उसने कह तो दिया, पर अब देखा कि अंधा वहीं ठगा-से खड़ा है। उसे अपराध-बोध हुआ। माफी माँगने की हिम्मत न जुटा पाई, और आगे बढ़ गई। घर आकर वह बहुत उदास थी। उसे बार-बार उस आदमी का चेहरा याद आ रहा था। वह खेलने नहीं गई, ही खाना खाया। उसकी माँ के पूछने पर अंतरा ने कहा, ''मैं बहुत बुरी हूँ।''-और सारी घटना सुना डाली। तब माँ ने प्यार से उसका सिर सहलाते हुए कहा, अगर तुम्हें अपनी गलती का एहसास हो गया है तो , तुम अभी भी एक अच्छी लड़की हो। अंतरा दुख से बोली, ''पर मैं उनसे माफी नहीं माँग पाई।'' इस पर माँ ने समझाया, ''आगे से तुम दूसरों की भावनाओं को ठेस न पहुँचाने का वादा करो तो समझो तुम्हारी सारी गलतियाँ माफ हो गईं।''''वादा करती हूँ।'' अंतरा ने दृढ़ता से कहा। और मुस्कुरा उठी।

तनु दिवाकर

बाल किलकारी, नवम्बर 2011 से उद्धृत

हँसो-हँसाओ

एक कंजूस ब्लेड से हाथ काट रहा था। उसकी पत्नी बोली-क्या कर रहे हो?
कंजूस-''डिटॉल गिर गया है। सोचा फर्श पर क्यों बर्बाद करूँ। हाथ काट कर लगा रहा हूँ।''

☺

एक सेठ के घर में एक बदमाश गया और बोला-''सोना कहाँ है? सेठ-इतना बड़ा घर है, कहीं भी सो जाओ।''

☺

बंटी-''कभी डाक्टर और भगवान को नाराज नहीं करना चाहिए।''
बबली- क्यों?
बंटी- ''क्योंकि भगवान नाराज हो तो डाक्टर के पास भेज देता है। यादि डाक्टर नाराज हो तो भगवान के पास भेज देता है।''

☺

संग्रहण-सुरभि

(प्रेरक प्रसंग)

मेहनत की कमाई

शहर में श्यामा नाम की एक धनवान महिला रहती थी। एक दिन एक भिखारिन उसके घर पर आई और भीख माँगती हुई बोली, ''बहन कुछ पैसे दे दो, मेरे पास खाने को कुछ नहीं है, मेरे बच्चे भी भूखे हैं। ''श्यामा बोली, मेरे घर में जूठे बरतन पड़े हैं, पहले उन्हें साफ कर दो, फिर मैं तुम्हें खाना दूँगी'' भिखारिन ने बरतन साफ कर दिए और खाना ले गई। अगले दिन भिखारिन फिर से आई और बोली, ''बहन पहनने को कपड़े नहीं हैं, कुछ मदद करो'' आज भी श्यामा बोली अन्दर कुछ मैले

कपड़े पड़े हैं, उन्हें धोकर सूखने डाल दो। मैं तुम्हें कुछ कपड़े देती हूँ'' भिखारिन ने कपड़े धो दिए और कुछ कपड़े ले गई। अब भिखारिन रोज आती और श्यामा उसे कोई-न-कोई काम करवाने के बाद ही उसकी मदद करती। एक दिन भिखारिन ने पूछा, ''बहन आपके पास तो घर में कई नौकर-चाकर हैं फिर आप मुझसे काम क्यों करवाती हैं?'' श्यामा बोली, मैं तुम से इसलिए काम करवाती हूँ ताकि तुम्हें अपनी मेहनत की कमाई मिले, भीख नहीं।'' श्यामा की इस सीख ने भिखारिन को समझ पैदा करवा दी। उसके बाद से उसने कभी भीख नहीं माँगी, बल्कि मेहनत करके खाने लगी।

प्रस्तुति-रौशन

बूझो तो जानें

- अगर कभी मुझको पाता, बड़े प्रेम से तोता खाता, बच्चे-बूढ़े खा लेते, व्याकुल हो आँख भर देते।
- बीमार नहीं रहती, फिर भी खाती गोली, बच्चे-बूढ़े डर जाते, सुनकर मेरी बोली।
- काला घोड़ा सफेद सवारी एक के बाद एक की बारी।
- सर पर आग बदन पर पानी, फिर भी जलाए मेरी नानी।
- बिल्ली की पूँछ हाथ में, बिल्ली गई इलाहाबाद में।
- एक बक्सा ऐसा देखा, नाच-गाना करते देखा।

संग्रहण-कमलेश

आओ खेलें खेल

खेल खेलने से पहले दो टीमें बराबर-बराबर की संख्या में बँटेंगी। कुछ चिड़ियों के हल्के-फल्के पंख जुगाड़ कर लें। यह पंख पार्क या मैदान में आसानी से मिल जायेंगे। अब दोनों टीमें चार-चार पंख ले लें। पंख लेकर दोनों टीमें अलग-अलग साइड हो जाएँ। खेंल खेलाने वाले जोर से बोलेंगे, खेल शुरू कहने के साथ ही दोनों टीम से एक सदस्य अपने हिस्से के पंखों को हवा में उछालेगा। दोनों टीमों के सदस्यों को फूँक मार-मार कर अपने -अपने हिस्से के पंखों को नीचे गिरने से रोकना है। दोनों टीमों को यही कोशिश रहेगी कि अपने-अपने हिस्से का पंख हवा में ज्यादा देर तक उड़ाते रहेगें। इस कोशिश में जो टीम कामयाब रहेगी, वही टीम विजेता मानी जायेगी।

बाल किलकारी, जून 2012 से उद्धृत

मित्रता

दो दोस्त थे। एक का नाम सूरज और दूसरे का नाम निर्भय था। दोनों में घनिष्ट मित्रता भी। दोनों एक साथ स्कूल जाते और एक साथ स्कूल से आते थे। एक बार उस दोनों में किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया। अब दोनों एक-दूसरे से नाराज रहने लगे। एक दिन क्लास के सभी बच्चे खेल रहे थे। उन में सूरज भी खेल रहा था, लेकिन जब भी सूरज की नज़र निर्भय पर पड़ती तो वह और भी नाराज हो जाता था। एक दिन बच्चों ने निर्भय से पूछा कि क्या वह सूरज से लड़ रहा है, क्या उन दोनों में लड़ाई हो गई हैं? तो इसपर सूरज ने कहा कि नहीं-नहीं! हम दोनों में कोई लड़ाई नहीं है। हम दोनों तो सिर्फ एक्टिंग कर रहे हैं। लेकिन उनदोनों में वाकई में झगड़ा था। उसी क्लास में राजू एक लड़का था। वह उनदोनों का मित्र था। निर्भय ने राजू से पूछा कि वह किससे बात करेगा? इसपर राजू ने कहा कि वह तो दोनों से ही बात करेगा। क्योकि झगड़ा उनदोनों में है और इसमें उसकी क्या गलती है, वह क्यो ऐसा करे। फिर राजू ने सारी बातें बाकी बच्चों को बता दी और सब बच्चों ने मिलकर निर्भय और सूरज में फिर से दोस्ती करवा दी। वे फिरसे घनिष्ठ मित्र बन गए और उनकी मित्रता जीवन भर रही।

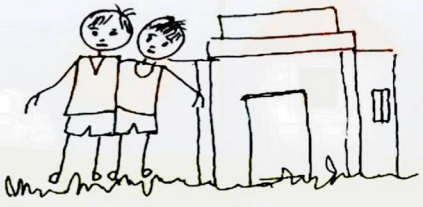

रिया कुमारी

बाल किलकारी, नवम्बर 2009 से उद्धृत

हमारा अधिकार

पढ़ना-लिखना खेलना-कूदना
और सुबह शाम मस्ती करना
हम बच्चों का यह अधिकार
बाल मजदूरी हमसे करवाके
न छीने बचपन का अधिकार।
ऊँच-नीच का भेदभाव करके,
कोई न हमको रूलाए,
जात-पात को लेकर हमसे
न छीने दोस्तों का प्यार
हम बच्चों का है यह अधिकार ।
खेलने से सब हमें मना करते,
रोज काम करने को कहते,
खेलने से कोई मना न करें,
हम बच्चों का है यह अधिकार।

खुशबू
बाल किलकारी, नवम्बर 2011 से उद्धृत

चालाक लोमड़ी

एक दिन शेर राजा हॉफ रहा था। तब , शेर राजा का सेनापति भेड़िया बोला ''महाराज आपके मुँह से बदबू आ रही है'' राजा ने गुस्साकर कहा, बदतमीज तुम्हें राजा से बात करने की तमीज नहीं? मैं एक राजा हूँ। भला मेरे मुँह से बदबू कैसे आ सकती है? कहते हुए शेर ने उसे दबोच कर मार डाला। यह देखकर लोमड़ी और भालू डर गए। उसके बाद शेर ने भालू को बुलाया और हॉफता हुआ बोला, क्या! मेरे मुँह से बदबू आ रही है? भालू ने डर कर कहा- ''नहीं। तो फिर शेर ने कहा, ''मैं जगंल का राजा हूँ। मैं सभी जानवरों को मारकर खाता हूँ। अगर मेरे मुँह से बदबू नहीं आएगी तो किसके मुँह से आएगी! ''शेर ने उसे भी मारकर खा लिया। फिर शेर ने पुल से गुजरते हुए एक किसान को बुलाकर पूछा, ''क्या मेरे मुँह से बदबू आती है'' किसान ने कहा, ''हाँ'' तो शेर किसान को भी मारकर खा गया। यह देखकर लोमड़ी और डर गई। फिर अगले दिन लोमड़ी को भी बुलाकर पूछा ''क्या , मेरे मुँह से बदबू आती है'' लोमड़ी ने कहा, ''महाराज मुझे जुकाम हो गया है। अच्छे-बुरे का पता ही नहीं चलता है'' इस तरह लोमड़ी ने अपनी जान बचा ली।

वृषभ कुमार
बाल किलकारी, जनवरी 2010 से उद्धृत

चूहा राजा

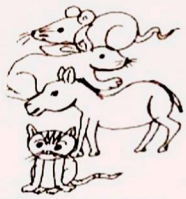

चूहा बना एक बार राजा,
खूब बजवाया बैंड बाजा।
मंत्रिमंडल में किया बदलाव,
चले उसने उल्टे दाँव।
खरगोश को सेनापति बनाया,
राजा बन बवाल मचाया,
गधे को बनाया महामंत्री,
शेर बन बैठा संतरी।
बिल्ली से चुकाया बदला,
दे दिया उसके देश-निकाला।
चूहा चला सीना तान,
उसके पीछे सारे जवान।
जानवर सारे हो गए पस्त,
जंगल हो गया अस्त-व्यस्त,
जानवरों ने बैठक बुलाई,
सभी ने अपनी राय सुनाई।
सारे जानवर हो गए एक,
चूहे को उठाकर दिया फेंक,
बन गया राजा फिर शेर,
मुसीबतें सारी हो गई ढेर।

रोहित कुमार
बाल किलकारी, 2010 से उद्धृत

कुछ नया करें-

बच्चो, तुम इधर-उधर फेके सामान से कुछ उपयोगी समान बना सकते हो। इसके लिए प्लास्टिक की खाली बोतल (पानी, कोल्ड ड्रींक या दवा की) लो। उस बोतल की पेंदे की ओर से 6-8 अंगुली लम्बाई में कैंची से काटो। बोतल काटते समय ध्यान रखना है कि इसे जब काट रहे हो, तब 1 और 2 अंगुली ऊपर तक छोड़कर (चित्रानुसार काटो।) अब इसे दीवार में ठोक दो। यह कलम रखने या ब्रश रखने का स्टैण्ड बन गया। तुम चाहो तो इस बोतल से गुलदस्ता भी बना सकते हो। इसके लिए बोतल को नीचे से 8 अंगुली छोड़कर काट दो। बोतल में कुछ गोलियाँ, गिट्टी या बालू डाल दो। बोतल में गोली, गिट्टी या बालू डालने से इसका आधार (निचला हिस्सा) भारी रहेगा और यह उलटेगा नहीं। अब इसमें फूल-पत्तियाँ डाल दो। तुम्हारा गुलदस्ता बन कर तैयार। अगर चाहो तो बोतल पर कागज चिपकाकर उस पर कुछ चित्र भी बना सकते हो।इसे और सुन्दर बनाने के लिए तुम खुद भी बहुत कुछ सोच सकते हो और इस तरह से फालतू सामानों से उपयोगी सामान बना सकते हो।

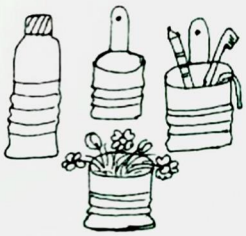

बाल किलकारी
नवम्बर 2009 से उद्धृत

एक चिठ्ठी ऐसी भी

परम पूजनीय प्रेशर कुकर काका तथा कड़ाही काकी ,सादर प्रणाम।

आपको यह जानकर बहुत प्रसन्नता होगी कि मेरी बेटी थाली की शादी हड़िया नगर निवासी श्री लोटा लाल के सुपुत्र चिरंजीव कटोरा लाल से तय हुई है। आप सब विवाह स्थल पर पधार कर वातावरण को सुशोभित करें और चटकदार भोजन खाकर मजा उठाएँ। यहाँ पर सुराही चाची और बाल्टी चाचा भी पधार रहे हैं। यदि आप सब इस शुभ अवसर पर अपनी सुपुत्री पहसुल की शादी हसुआ काका के सुपुत्र चिरंजीव चाकू से करवाना चाहते हैं तो उसे भी साथ लाएँ, ताकि दोनों एक-दूसरे को अच्छी तरह से देख और समझ लें। शेष कुशल, गिलास भईया को पानी भरा प्यार देना।

द्वारा श्री पीतल छोलनी, लोहा मोहल्ला, बरतन नगर (रसोई प्रदेश)

आपका भतीजा-तवा लाल

मुनटुन
बाल किलकारी, मार्च 2011 से उद्धृत

नन्हीं तूलिका

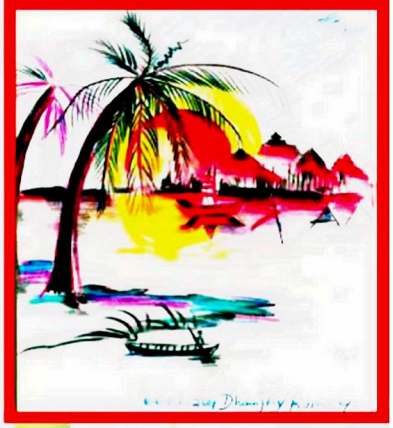

इस अंक के जवाब

बूझो तो जानें

मिर्च, बन्दुक, रोटी-तावा,
मोमबत्ती, पतंग, टी.वी.,

घुमा-डाला

200, किल्ली और बिल्ली

बाल सम्पादक - मुनटुन, प्रवीण, सम्राट, राहुल, अभिनंदन, प्रियंतरा,
संयोजक - सुधीर कुमार,
कार्यकारी सम्पादक - राजीव रंजन श्रीवास्तव
सम्पादक - ज्योति परिहार, निदेशक बिहार बाल भवन किलकारी, पटना
कार्यालय - बिहार बाल भवन सैदपुर, किलकारी, पटना-800004 (बिहार)

झरोखा

किलकारी बाल मेला

धमाचौकड़ी, धूम-धड़ाका, लगे हैं ठेलम-ठेले में, रंग-बिरंगी प्रस्तुति से, धूम मची है मेले में। चौदह नवम्बर का मौका। जब किलकारी में मौज-मस्ती से भरा लगा-बाल मेला। इस दो दिवसीय बाल मेले में रंग-बिरंगे स्टॉल लगे। बर्गर, मोमो, समोसे, चाऊमीन, लिट्टी....वाह!.....वाह! ताजे-ताजे व्यंजन खाने में मजा आ गया। क्राफ्ट का स्टॉल, विज्ञान का भी स्टॉल लगा। मुझे तो वह फूल वाली टोकरी बहुत पसंद आयी, जिसमें ढेर सारी चिड़ियाँ रानी थी। बहुरूपिया का नाम तो सुना होगा? पता है मेले में वे भी आए। बड़ी दूर से यानी जयपुर से। कोई भगवान शंकर बना, तो कोई देवी काली और एक आदमी तो बादशाह अकबर बना। और एक राक्षस था, जो बड़ी डरावनी हँसी हँस रहा था, मुझे तो हनुमान जी की पूँछ बड़ी अच्छी लगी.... लंबी सी। इसके अलावा ट्रैक म्यूजिक, नाटक, पोपेट शो, लोक नृत्य, लोक संगीत और हाँ डाँस भी हुआ। मजे की बात तो यह है कि सूरज चाचू भी हमारे साथ मेले का लुत्फ उठाते रहे। मस्ती भरा यह बाल- मेला रहा.... मजेदार और रंगा-रंग!

-अभिनंदन गोपाल

शिक्षा दिवस 2016

11 एवं 12 नवम्बर को हमारे देश के प्रथम शिक्षा मंत्री 'मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद' जी का जन्मदिवस है, इस अवसर पर हम शिक्षा दिवस मनाते हैं। इस दिन कई प्रतियोगिताएँ और कार्यक्रम आयोजित होते हैं। इसबार हमारी किलकारी के लिए भी ये दिन बहुत ख़ासा था। पटना के श्री कृष्ण मेमोरियल हॉल में 11 नवम्बर को शिक्षा दिवस कार्यक्रम में हमारे यश भईया और श्रुति दी उद्घोषणा कर रहे थे और किलकारी के बच्चे नृत्य की प्रस्तुति दे रहे थे। दूसरी ओर ए॰ एन॰ सिन्हा इंस्टीच्यूट् में 'चहक' मॉड्यूल के कार्यक्रम में सरकारी स्कूलों के बच्चें अपना प्रदर्शन कर रहे थे। 'चहक' यह पहली कक्षा के बच्चों के लिए शिक्षा मॉड्यूल जो कि कई सरकारी स्कूलों में पढ़ाया जाता हैं। इसकी पहल हमारी किलकारी ने इसलिए की, ताकि सभी बच्चे खेल-खेल में पढ़ सकें। तो 'कौआ करता काँव-काँव' 'चिड़िया-चिड़िया उड़ती जा' 'चना कैसे बोया कैसे बोया रे' 'पाँच छोटी चिड़ियाँ' जैसे कई गीतों एवं नाटकों की प्रस्तुति हुई। वहीं बाल कवियों की कविताएँ भी गूँजीं। उद्घोषणा मैं और आकाश भईया कर रहे थे। तो कुल मिलाकर हमारा वह शिक्षा-दिवस बहुत खास रहा। वैसे, किसी ने कहा है'' साथ छूटे भी तो साथ रिश्ते नहीं छूटा करते, वक्त की धूंध से लम्हे नहीं टूटा करते, लोग कहते हैं मेरा सपना टूट गया, अरे टूटी तो अभी नींद है सपने नही टूटा करते।

आकाश

तुम तो हो सुन्दर जादू

छुक-छुक-छुक-छुक चलती तुम,
हो कई डब्बों वाली गाड़ी।
बैठे रहते तुम पर हम तो,
दीनू, मीनू ढेर सवारी।
तुम सबसे हो चलती तेज,
दूर-दूर तक जाती हो।
चाची, मौसी, इसको, उसको,
बहुत जल्द पहुँचाती हो।
मालगाड़ी सखी तुम्हारी,
अँटी-पड़ी सामानों से।
कभी जंगल से, कभी गिरि से,
कभी खेत-खलिहानों सें।
बैठने के तुम पर फेरे में,
दौड़-दौड़ लोग आते है।
रहती ज्यादा भीड़ अगर तो,
लटक-लटक कर जाते है।
तुम पर बैठ मज़ा खूब लेते,
चाचा, नानी या हो दादू।
हम बच्चों के लिए तो बहना,
तुम तो हो सुन्दर जादू।

सम्राट समीर
वर्ग- दशम्

चीं-चीं फिल्म फेस्ट

दिनांका 14-15 नवबंर को किलकारी, बिहार बाल-भवन में बहुप्रतीक्षित 'चीं-चीं फिल्म फेस्ट' का आयोजन हुआ। उद्घाटनकर्ता एवं मुख्य अतिथि बिहार के माननीय शिक्षा मंत्री डॉ॰ अशोक चौधरी थे। आगाज़ समाज की बुराइयों पर जोर बच्चों द्वारा अभिनीत फिल्म 'गूँजा'' के साथ हुआ तथा अंत एक बेहद मजेदार एनिमेटेड मूवी 'फाइंडिगं नेमो' के साथ हुआ। इस फिल्म फेस्ट का मूल उद्देश्य बिहार के बच्चों में फिल्म -निर्माण के प्रति रूचि पैदा करना है। इस हेतु केवल बिहार के बच्चों से उनके द्वारा बनाई गई 1 से 10 मिनट की फिल्में आमंत्रित की गई थीं। लगभग पचास प्रविष्टियाँ आयीं जिनमें पाँच फिल्मों को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया। विजेता बच्चे माननीय मंत्री जी द्वारा सम्मानित किए गए। इस फेस्ट में कुल 27 फिल्में दिखाई गई जिनमें बाईस फिल्में लघु तथा पाँच फिल्में लम्बी' अवधि की थीं। फिल्म देखने के बाद बच्चों ने समीक्षा भी लिखी। सर्वश्रेष्ठ समीक्षक युवराज सिंह सम्मानित किए गए। दिनांक 15 नवम्बर की शाम समापन-समारोह में मुख्य अतिथि श्री गंगा कुमार, प्रबंध निदेशक, स्टेट फिल्म डेवलपमेंट एण्ड फिन्नांस विशिष्ट अतिथि के रूप में जाने-माने अभिनेता विनीत कुमार थे। कार्यक्रम का सबसे खास आकर्षण राजस्थान से आए बहुरूनपिया बंधु थे जिन्होंने अपनी कला से सबका दिल जीत लिया।

यश रजंन सिन्हा